चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	28.1.24	3	1-6

भास्कर खास • पद्मश्री रामचंद्र सिहाग की कहानी- देशभर के मधुमक्खी पालकों को कर रहे हैं जागरूक

48 साल से मधुमक्खियों के लिए कर रहे काम, हरियाणा में इटेलियन मधुमक्खियां ला शहद उत्पादन कराया शुरू

यशपाल सिंह | हिसार

भारत में सन 1980 में सिर्फ 5 हजार किलोग्राम शहद का उत्पादन होता था। भारत में मधुमक्खियां बीमारी के कारण 90 प्रतिशत तक समाप्त हो चुकी थीं। भारत में डाबर जैसी बड़ी कंपनियां नेपाल व दूसरे देशों से शहर का आयात कर रही थीं। ऐसे विपरित हालातों में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मधुमक्खी वैज्ञानिक डॉ. रामचंद्र सिहाग ने सन् 1982 में इटेलियन मधुमक्खियां मंगवाकर काम शुरू किया। वे बीते 48 वर्षों से मधुमक्खियों के शोध से जुड़े हैं। साल 1982 में इटेलियन मधुमक्खियों के 30 बॉक्स हकृवि को दिए गए थे। राज्य को वातावरण की दृष्टि से तीन जोन साउदर्न, वेस्टर्न और ईस्ट जोन में बांटकर काम आरंभ किया गया। साल 2020 में भारत सरकार की रिपोर्ट के अनुसार ही देश में अब 1 लाख मीट्रिक टन शहद का उत्पादन हो रहा है। इससे जीडीपी में 200 बिलियन रुपये का कारोबार हो रहा है, अकेले हरियाणा से अब 10 हजार मीट्रिक टन शहद उत्पादन हो रहा है। दो लाख मधुमक्खी पालक देशभर में हैं। हरियाणा में जिस इटेलियन मधुमक्खी पर काम शुरू हुआ वह अब कई राज्यों तक फैल चुकी है।

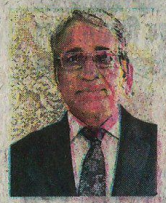

डॉ. रामचंद्र सिहाग।

मधुमक्खियों पर शोध के लिए रोज उनके साथ 14 से 16 घंटे बिताए

डॉ. रामचंद्र सिहाग ने बताया कि हरियाणा को साल 1968 में मधुमक्खियों पर प्रॉजेक्ट मिला था। इंडियन मधुमक्खियां बीमारी से मर रही थीं। प्रॉजेक्ट फेल हो रहे थे। उनको जब प्रॉजेक्ट मिला तो इटेलियन मधुमक्खियां मंगवाईं। हर रोज 14 से 16 घंटे तक मधुमक्खियों के साथ समय बिताते थे। गर्मी के सीजन में बॉक्स पंचकूला व हिमाचल भेजे जाते। इनके दुश्मन कीटों, भोजन, जरूरतों पर लगातार शोध करते रहे। धीरे-धीरे यह मधुमक्खियां हमारे वातावरण के अनुकुल हुई।

एचएयू अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बना रहा पहचान : प्रो. कांबोज

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो पूर्व वैज्ञानिकों डॉ. हरिओम व डॉ. रामचंद्र सिहाग को पदमश्री अवार्ड से सुशोभित होने पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बधाई दी। वैज्ञानिकों द्वारा ईजाद की गई उन्नत किस्में देश भर में लोकप्रिय हो रही है, जिसकी बदौलत विश्वविद्यालय लगातार राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बना रहा है। विश्वविद्यालय के एल्युमिनाई एवं मेजर जनरल प्रमोद बतरा को विशिष्ट सेना मेडल मिला है। उन्होंने बताया कि डॉ. हरिओम ने 36 साल तक हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में समर्पण व ईमानदारी के साथ अपनी सेवाएं दी। वर्तमान में वे हरियाणा सरकार द्वारा संचालित परियोजना के तहत प्राकृतिक खेती विषय राज्य प्रशिक्षण सलाहकार के पद पर कार्य कर रहे हैं।

मोबाइल से कंप्यूटर तक मधुमक्खियों के लगा रखे हैं फोटो

डॉ. रामचंद्र सिहाग मूलत: अग्रोहा के निकट सिवानी बोलान गांव के रहने वाले हैं। उन्होंने बीएससी की पढ़ाई राजकीय कॉलेज हिसार से की और इसके बाद एमएससी जुलॉजी कैयूके से की और गोल्ड मेडलिस्ट रहे। 1975 में हकृवि में डॉ. आरपी कपिल के निर्देशन में मधुमक्खियों से संबंधित परागकण कीड़ों पर पीएचडी आरंभ की। सन 1979 में हकृवि में बतौर शिक्षक ज्वाइनिंग की। वे 1975 से ही मधुमक्खियों को लेकर रिसर्च पर जुटे हैं। पत्नी निर्मला कहती हैं कि उनके मोबाइल से लेकर कंप्यूटर पर सभी जगह मक्खियों के ही फोटो नजर आएंगे। कई बार हमारे रिश्तेदार कहते थे कि इनको मधुमक्खियों के अलावा और कुछ नही नजर आता।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	28.1.24	3	4-5

हकृवि के 2 पूर्व वैज्ञानिकों को पदमश्री अवार्ड मिलना गर्व की बात : कुलपति

डा.हरिओम ने प्राकृतिक खेती में बनाई अपनी विशेष पहचान

हिसार, 27 जनवरी (राठी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के दो पूर्व वैज्ञानिकों डॉ. हरिओम व डॉ. रामचंद्र सिहाग को पदमश्री अवार्ड से सम्मानित किया गया है। इसके अलावा उपरोक्त विश्वविद्यालय के एल्युमिनाई एवं मेजर जनरल प्रमोद बतरा को विशिष्ट सेना मेडल मिला है। हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने विश्वविद्यालय के दोनों पूर्व वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए इसे विश्वविद्यालय के लिए गर्व का विषय बताया।

उन्होंने बताया कि डॉ. हरिओम ने प्राकृतिक खेती व डॉ. रामंचद्र सिहाग ने मधुमक्खी पालन विषय बेहतरीन सेवाएं देकर किसानों को न बल्कि प्रशिक्षित किया अपितु उनके स्वरोजगार इकाई को स्थापित करने में अपनी अहम भूमिका अदा की। डॉ. हरिओम ने 36 साल तक चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अपनी सेवाएं दी। वर्तमान में वे प्राकृतिक खेती विषय राज्य प्रशिक्षण सलाहकार के पद पर कार्य कर रहे हैं।

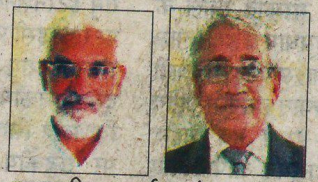

पदमश्री अवार्ड पाने वाले डॉ. हरिओम व डॉ. रामचंद्र सिहाग।

डा.रामचन्द्र सिहाग ने मधुमक्खी पालन में दी बेहतर सेवाएं

प्रोफेसर रामचंद्र सिहाग अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविद् है। उन्होंने नवंबर 1979 से जनवरी 2012 तक चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं दी, जिनमें 1979 से 1988 तक उन्होंने विशेष रूप से मधुमक्खी पालन विषय पर अपना अहम योगदान दिया।

1988 से 1995 तक उन्होंने एसोसिएट प्रोफेसर, रिसर्च लीडर, 1995 से 2012 तक पर्यावरण जीव विज्ञान, 1997 से 2000 व 2011 से 12 तक प्राणीशास्त्र विभाग और डीन, कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस एवं ह्यूमैनिटीज में 2001 से 2006 तक विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	28.1.24	4	1-4

सम्मान

एचएयू के पूर्व वैज्ञानिक की देखरेख में मधु आयातक से निर्यातक बना भारत, अब मिला पद्मश्री पुरस्कार

प्रो. सिहाग ने मधुमक्खी पालन को दी संजीवनी

श्याम नंदन कुमार

हिसार। हरियाणा समेत पूरे उत्तर भारत में मधुमक्खी पालन को जोखिम का काम माना जाता था। इसके दो कारण थे- पहला यह कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और पंजाब कृषि विश्वविद्यालय दोनों ही जगह मधुमक्खी पालन को कारोबार बनाने का प्रयास विफल हो चुका था। दूसरा यह कि 1978 में हरियाणा में मधुमक्खी में बीमारी आने के कारण इनकी 90 फीसदी कॉलोनियां नष्ट हो गई थीं। दो हजार मधुमक्खी पालक तबाह हो गए थे।

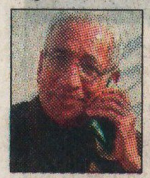

प्रो. रामचंद्र।

इन परिस्थितियों में कोई भी व्यक्ति न मधुमक्खी पालन करने की सोच रहा था न कोई कीट विज्ञानी इस संबंध में शोध करना चाह रहा था। इन प्रतिकूल परिस्थितियों में मधुमक्खी विशेषज्ञ प्रोफेसर रामचंद्र सिहाग ने न सिर्फ मधुमक्खी पर शोध किया, वरन मधुमक्खी पालन को पूरे देश में पहुंचाया।

प्रोफेसर सिहाग बताते हैं कि जब उन्होंने मधुमक्खी पर काम करने की इच्छा जताई थी तो उनके विभागाध्यक्ष ने सलाह दी थी कि मत्स्य पालन या किसी और क्षेत्र में काम करो। इसमें सफल होने की संभावना कम है। लेकिन मेरा इसी विषय में ज्यादा अध्ययन था। इसी पर काम करना चाहता था। अब मधुमक्खी पालन पर सफल शोध किसानों के लिए ही नहीं, मेरे करियर के लिए भी आवश्यक हो गया था। अब मैंने उन बिंदुओं पर अध्ययन करना शुरू किया जिनका पहले अध्ययन नहीं किया गया था। मैंने मधुमक्खियों के जीवन चक्र और प्रबंधन का बारीकी से अध्ययन किया। उन कीटों और पक्षियों की पहचान की जो मधुमक्खियों के दुश्मन है। उनसे बचाव के उपाय तलाशे। उनकी बीमारियों का अध्ययन किया। 1980 से 82 तक मधुमक्खियों पर मेरे उत्कृष्ट कार्य के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की ओर रफी अहमद किदवई ममोरियल पुरस्कार से नवाजा गया।

हर किसान प्राकृतिक खेती से जुड़े, यही लक्ष्य : डॉ. हरिओम

पद्मश्री पुरस्कार के लिए चयनित वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. हरिओम ने कहा कि उनका लक्ष्य है प्राकृतिक खेती से हर किसान जुड़े। एक गाय को रखकर 16 एकड़ तक की खेती किसान बिना लागत के करते हुए बड़ा मुनाफा कमा सकता है। गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत के निर्देशन में गुरुकुल फार्म पर प्राकृतिक खेती को देख हर कोई हैरान है। डॉ. हरिओम 10 हजार से ज्यादा किसानों, 500 वैज्ञानिकों व 100 से ज्यादा आईएएस को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण दे चुके हैं।

*"हमारे संस्थान से जुड़े दो पूर्व वैज्ञानिकों डॉ. हरिओम व डॉ. रामचंद्र सिहाग को पद्मश्री अवॉर्ड से सुशोभित किया जाना संस्थान के लिए गौरव की बात है। मैं दोनों पूर्व वैज्ञानिकों को बधाई देता हूं। - **प्रो.बीआर कांबोज, कुलपति, एचएयू***

ऐसे बढ़ा मधुमक्खी पालकों का कारवां : प्रो सिहाग बताते हैं कि उन्होंने 1982 में इटालियन मधुमक्खी के पालन का काम आगे बढ़ाया। पहली बार यमुनानगर में 50 किसानों मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण दिया। लोगों को इटालियन मधुमक्खी पालन के लिए प्रेरित किया, क्योंकि इटालियन मधुमक्खी प्रतिकूल परिस्थितियां मिलने पर प्रति कालोनी 30 किलो तक मधु दे देती हैं, वहीं भारतीय मधुमक्खी ढाई से पांच किलो तक ही मधु देती थी। धीरे-धीरे यह व्यवसाय पहले हरियाणा, फिर उत्तर प्रदेश, बिहार होते हुए पूरे देश में पहुंच गया। 1980 में मधुमक्खी की कालोनियां जो 5 हजार थी वह अब बढ़कर 30 लाख हो गई हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	28.1.24	13	2-5

विवि के एल्युमिनाई एवं मेजर जनरल प्रमोद को मिला विशिष्ट सेना मेडल

एचएयू के दो पूर्व वैज्ञानिकों को पदमश्री मिलना गौरव का पल

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार किसानों की आर्थिक दशा को मजबूत करने के लिए प्रयासरत है

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो पूर्व वैज्ञानिकों डॉ. हरिओम व डॉ. रामचंद्र सिहाग को पदमश्री अवार्ड से सुशोभित होने पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बधाई व शुभकामनाएं दी। साथ ही भविष्य में भी इसी प्रकार किसानों के हित को ध्यान में रखते हुए अपनी सेवाएं जारी रखने की कामना भी की। कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार किसानों की आर्थिक दशा को मजबूत करने के लिए प्रयासरत है। डॉ. हरिओम ने प्राकृतिक खेती व डॉ. रामंचद्र सिहाग ने मधुमक्खी पालन विषय बेहतरीन सेवाएं देकर किसानों को न बल्कि प्रशिक्षित किया अपितु उनके स्वरोजगार इकाई को स्थापित करने में अपनी अहम भूमिका अदा की। इसके अलावा उपरोक्त विश्वविद्यालय के

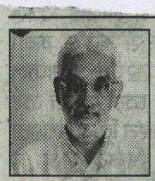

पदमश्री अवार्ड पाने वाले डॉ. हरिओम।

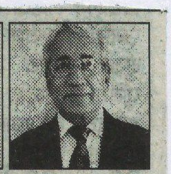

पदमश्री अवार्ड पाने वाले डॉ. रामचंद्र सिहाग।

एल्युमिनाई एवं मेजर जनरल प्रमोद बतरा को विशिष्ट सेना मेडल मिला है। डॉ. हरिओम ने 36 साल तक हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में समर्पण व ईमानदारी के साथ अपनी सेवाएं दी। प्रोफेसर रामचंद्र सिहाग अंतरराष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविद् है। उन्होंने नवंबर 1979 से जनवरी 2012 तक हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	28.1.24	3	2-5

डा. रामचंद्र ने रिसर्च कर मधुमक्खियों को मरने से बचाया

एचएयू के बेसिक साइंस के पूर्व डीन को मिलेगा पद्मश्री

जागरण संवाददाता, हिसार : मधुमक्खी से हर कोई बचता हैं। उससे दूर भागता है। मगर यह किसी की दोस्त भी हो सकती है और उसे अवार्ड दिलवा सकती है यह सुनकर अजीब लगेगा। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के बेसिक साइंस के पूर्व डीन एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के प्रतिष्ठित रफी अहमद किदवई अवार्ड से सम्मानित डा. राम चंद्र सिहाग मधुमक्खी के दोस्त हैं। 49 साल से वह उन पर रिसर्च कर रहे हैं। 1982 में उनकी रिसर्च की बदौलत ही हरियाणा में मधुमक्खी पालन शुरू हुआ था। इटालियन मधुमक्खी मेलिफेरा प्रजाति को पाला और आज देश में शहद का कारोबार बहुत ऊंचाईयों पर हैं। 1982 से पहले मौसम अनुकूल नहीं होने के कारण मधुमक्खी मरती थी। उन पर हुई दो रिसर्च भी कामयाब नहीं हुई थी। उस रिसर्च और मधुमक्खी पालन बढ़ने पर अब सरकार की तरफ से डा. रामचंद्र सिहाग को पद्मश्री अवार्ड दिया जाएगा।

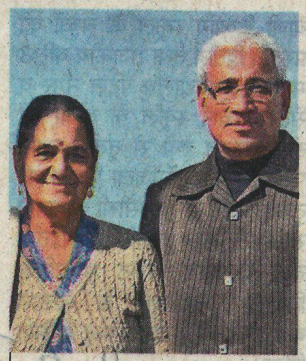

डा. रामचंद्र सिहाग अपनी धर्मपत्नी निर्मला के साथ। • जागरण

यह अवार्ड मिल चुके

डा. रामचंद्र को रफी अहमद किदवई मेमोरियल पुरस्कार के अलावा 1993 में मधुमक्खियों के संरक्षण विषय पर कार्य करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के कृषि विभाग से समूह पुरस्कार-सह प्रशंसा प्रमाण पत्र भी दिया गया। 2005 में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में परागणकों के संरक्षण के लिए पादप विभाग भारत पर स्क्राल आफ आनर प्राप्त किया। जैव विविधता के सरंक्षण के लिए डा. रामचंद के लाइफ टाइम अचीवमेंट सहित कई अवार्ड मिल चुके हैं।

घर पर बधाई देने वालों का लगा तांता

डा. रामचंद्र सिहाग को पद्मश्री अवार्ड मिलने की सूचना के साथ ही बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ हैं। घर पर डा. रामचंद्र के भाई जयबीर पंघाल, भाजपा नेता अजय सिंधु, पूर्व सरपंच बारूराम, सत्यवान, ज़यवीर जागलान सहित अनेक परिवार के लोग बधाई देने पहुंचे।

सेक्टर 15 निवासी डा. राम चंद्र सिहाग ने 1975 में हकृवि में पीएचडी करने के लिए दाखिला लिया था। उस समय उनको मधुमक्खी पर रिसर्च करने का टापिक मिला। उसके बाद वह 1979 में नौकरी में आ गए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	28.1.24	4	5-8

हकृवि के दो पूर्व वैज्ञानिकों को मिला पद्मश्री अवार्ड

पूर्व छात्र मेजर जनरल प्रमोद बतरा को विशिष्ट सेना मेडल

हिसार, 27 जनवरी (हप्र)

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो पूर्व वैज्ञानिकों डॉ. हरिओम व डॉ. रामचंद्र सिहाग को पद्मश्री अवार्ड से सुशोभित होने पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार किसानों की आर्थिक दशा को मजबूत करने के लिए प्रयासरत हैं। वैज्ञानिकों द्वारा इजाद की गई उन्नत किस्में देश भर में लोकप्रिय हो रही हैं, जिसकी बदौलत विश्वविद्यालय लगातार राष्टीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बना रहा है। डॉ. हरिओम ने प्राकृतिक खेती व डॉ. रामंचद्र सिहाग ने मधुमक्खी पालन विषय बेहतरीन सेवाएं देकर किसानों को न बल्कि प्रशिक्षित किया अपितु उनके स्वरोजगार इकाई को स्थापित करने में अपनी अहम भूमिका अदा की। इसके अलावा, उपरोक्त विश्वविद्यालय के एल्युमिनाई एवं मेजर जनरल प्रमोद बतरा को विशिष्ट सेना मेडल मिला है।

डॉ. हरिओम ने 36 साल तक हिसार विवि में सेवाएं दीं। वर्तमान में वे हरियाणा सरकार द्वारा संचालित परियोजना के तहत प्राकृतिक खेती

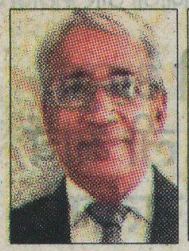

रामचंद्र सिहाग

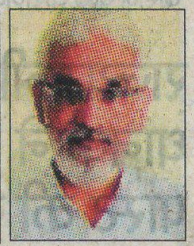

डॉ. हरिओम

विषय राज्य प्रशिक्षण सलाहकार के पद पर कार्य कर रहे हैं। डॉ. हरिओम ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र स्थित प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण संस्थान में 10 हजार से अधिक किसानों सहित अन्य हितधारकों को प्राकृतिक खेती विषय पर प्रशिक्षण देकर उनको आत्मनिर्भर बनाया है।

प्रोफेसर रामचंद्र सिहाग अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविद् है। उन्होंने नवंबर 1979 से जनवरी 2012 तक चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं दी। 1979 से 1988 तक उन्होंने विशेष रूप से मधुमक्खी पालन पर योगदान दिया। 1988 से 1995 तक उन्होंने एसोसिएट प्रोफेसर, रिसर्च लीडर, 1995 से 2012 तक पर्यावरण जीव विज्ञान, 1997 से 2000 व 2011 से 12 तक प्राणीशास्त्र विभाग और डीन, कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस एवं ह्यूमैनिटीज में 2001 से 2006 तक विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं दी। डॉ. रामचंद्र सिहाग के पास शिक्षण, अनुसंधान, शैक्षिक प्रबंधन व सरकारी संगठनों में 40 वर्षों का अनुभव है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	27.01.2024	--	--

हकृवि के दो पूर्व वैज्ञनिकों को पदमश्री अवार्ड मिलना गौरव की बात : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार (चिराग टाइम्स)

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के दो पूर्व वैज्ञानिकों डॉ. हरिओम व डॉ. रामचंद्र सिहाग को पदमश्री अवार्ड से सुशोभित होने पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बधाई व शुभकामनाएं दी। साथ ही भविष्य में भी इसी प्रकार किसानों के हित को ध्यान में रखते हुए अपनी सेवाएं जारी रखने की कामना भी की। कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार किसानों की आर्थिक दशा को मजबूत करने के लिए प्रयासरत है। वैज्ञानिकों द्वारा इजाद की गई उन्नत किस्में देश भर में लोकप्रिय हो रही है, जिसकी बदौलत विश्वविद्यालय लगातार राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बना रहा है। कुलपति ने कहा कि भविष्य में भी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य करते रहेंगे व देश को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने में योगदान देंगे। डॉ. हरिओम ने प्राकृतिक खेती व डॉ. रामचंद्र सिहाग ने मधुमक्खी पालन विषय बेहतरीन सेवाएं देकर किसानों को न बल्कि प्रशिक्षित किया अपितु उनके स्वरोजगार इकाई को स्थापित करने में अपनी अहम भूमिका अदा की। इसके अलावा उपरोक्त विश्वविद्यालय के एल्युमिनाई एवं मेजर जनरल प्रमोद बतरा को विशिष्ट सेना मेडल मिला है।

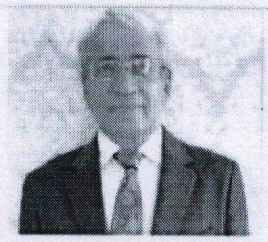

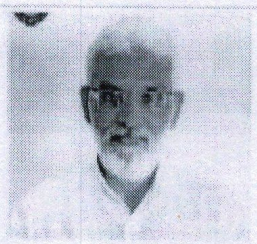

डॉ. हरिओम ने 36 साल तक चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में समर्पण व ईमानदारी के साथ अपनी सेवाएं दी। वर्तमान में वे हरियाणा सरकार द्वारा संचालित परियोजना के तहत प्राकृतिक खेती विषय राज्य प्रशिक्षण सलाहकार के पद पर कार्य कर रहे हैं। डॉ. हरिओम ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र स्थित प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण संस्थान में 10 हजार से अधिक किसानों सहित अन्य हितधारकों को प्राकृतिक खेती विषय पर प्रशिक्षण देकर उनको आत्मनिर्भर बनाया है। इसके अलावा उन्होंने देश के 500 से अधिक कृषि विज्ञान केंद्रों के आईसीएआर के वैज्ञानिकों को भी प्रशिक्षित किया है। इतना ही नहीं, डॉ. हरिओम ने केंद्रीय कृषि मंत्रालय के तहत स्वीकृत 11-13 सितंबर 2023 में नेपाल के 25 व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि को भी प्रशिक्षण दिया। साथ ही बीते साल गुजरात के 60 कलेक्टरों और डीडीओ को भी प्राकृतिक खेती विषय पर अहम जानकारियां प्रदान कर उनका मूल्यांकन भी किया। डॉ. हरिओम ने अप्रैल 2023 में श्रीलंका के उच्चायुक्त की अध्यक्षता में प्रतिनिधियों का मार्गदर्शन करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अलावा इनकी अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियों के चलते डॉ. हरिओम को देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल भी सम्मानित कर चुके हैं। भारत के पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद सहित चार राज्य जिनमें पंजाब, हरियाणा, गुजरात व हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के समक्ष डॉ. हरिओम ने प्राकृतिक खेती के कार्य, प्रदर्शन और संभावनाओं पर ज्ञानवर्धन प्रस्तुतियां दी। इतना ही नहीं, डॉ. हरिओम के नेतृत्व व मार्गदर्शन में जिला कैथल व कुरुक्षेत्र के 4 किसान जोनल व राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

प्रोफेसर रामचंद्र सिहाग अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविद् हैं। उन्होंने नवंबर 1979 से जनवरी 2012 तक चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं दी, इसके अलावा उन्होंने मधुमक्खी पालन के साथ-साथ पर्यावरण जीव-विज्ञान, मछली रोग विज्ञान, वर्मीकल्चर के अनुशासन में भी कई शोध किए है।

इसके अलावा डॉ. रामचंद्र सिहाग ने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 190 से अधिक शोध और तकनीकी लेख प्रकाशित किए है। साथ ही पत्रिकाएं समेत 6 पुस्तकें संपादित भी की। 1980 से 82 तक मधुमक्खियों पर उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए उन्हें नई दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से रफी अहमद किदवई ममोरियल पुरस्कार से नवाजा गया। 1993 में मधुमक्खियों के संरक्षण विषय पर कार्य करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के कृषि विभाग से समूह पुरस्कार-सह प्रशंसा प्रमाण पत्र भी दिया गया। 2005 में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में परागणकों के संरक्षण के लिए पादप विभाग भारत पर स्कॉलर ऑफ ऑनर प्राप्त किया। जैव विविधता के संरक्षण के लिए, डॉ. रामचंद को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, 2007 में चंडीगढ़ में एनवायरनमेंट सोसाइटी ऑफ इंडिया से पर्यावरण और कल्चरल एंड सोशल वेलफेयर सोसाइटी ऑफ इंडिया, हिसार से एजुकेशनल संबंधित पुरस्कार भी प्राप्त किए। 2008 में इन्हें पर्यावरण संरक्षण के लिए ई.पी.ओडुम मेमोरियल अवार्ड और 1997 में एशियन एपीकल्चरल एसोसिएशन चीन में परागण अनुभाग के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। वर्तमान समय में डॉ. रामचंद्र जर्नल ऑफ एंटोमोलॉजी के संपादक पद पर कार्यरत है। ये 5 अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं के क्षेत्रीय संपादक, 2 अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं के एसोसिएट संपादक व अन्य 15 राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्ड के सदस्य भी रहे। इससे पूर्व उन्होंने 1990 से 1994 तक इंडियन बी जर्नल के संपादक के रूप में भी कार्य किया।

इसके अलावा डॉ. सिहाग को संयुक्त राज्य अमेरिका के कृषि विभाग के वैज्ञानिकों व औद्योगिक परिषद जैसी एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित मधुमक्खियों व मधुमक्खी पालन विषय पर 6 शोध परियोजनाएं भी पूरी की। डॉ. रामचंद्र ने 29 पीजी स्कालर्स का मार्गदर्शन भी किया। साथ ही उन्होंने मधुमक्खी पालन में 100 हजार से अधिक लोगों को स्वरोजगार दिया। डॉ. रामचंद्र के सराहनीय कदम की बदौलत जो 1980 में मधुमक्खी की कालोनियां 5 हजार थी वह अब बढ़कर 30 लाख कालोनियां है।

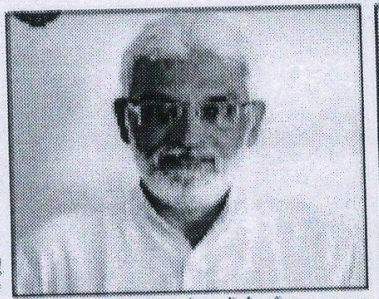

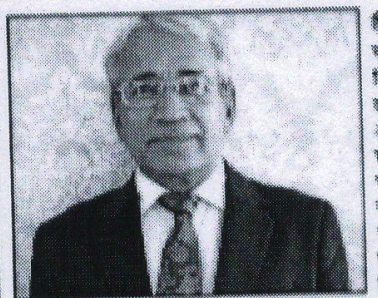

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	27.01.2024	--	--

हकृवि के दो पूर्व वैज्ञनिकों को पदमश्री अवार्ड मिलना गौरव की बात : प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

[illegible]

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पान्च [illegible]	27.01.2024	--	--

विश्वविद्यालय के एल्युमिनाई एवं मेजर जनरल प्रमोद बतरा को मिला विशिष्ट सेना मेडल

हकृवि के दो पूर्व वैज्ञानिकों को पदमश्री अवार्ड मिलना गौरव की बात : प्रो. काम्बोज

[illegible]

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के दो पूर्व वैज्ञानिकों डॉ. हरिओम व डॉ. रामचंद्र सिहाग को पद्मश्री अवार्ड से सुशोभित होने पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बधाई व शुभकामनाएं दी। साथ ही भविष्य में भी इसी प्रकार किसानों के हित को ध्यान में रखते हुए अपनी सेवाएं जारी रखने की कामना भी की।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार किसानों की आर्थिक दशा को मजबूत करने के लिए प्रयासरत हैं। वैज्ञानिकों द्वारा इजाद की गई उन्नत किस्में देश भर में लोकप्रिय हो रही हैं, जिसकी बदौलत विश्वविद्यालय लगातार राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बना रहा है। कुलपति ने कहा कि भविष्य में भी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य करते रहेंगे व देश को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने में योगदान देंगे। डॉ. हरिओम ने प्राकृतिक खेती व डॉ. रामचंद्र सिहाग ने मधुमक्खी पालन विषय बेहतरीन सेवाएं देकर किसानों को न केवल प्रोत्साहित किया अपितु उनके स्वरोजगार इकाई को स्थापित करने में अहम भूमिका अदा की। इसके अलावा उपरोक्त विश्वविद्यालय के एल्युमिनाई एवं मेजर जनरल प्रमोद बतरा को विशिष्ट सेना मेडल मिला है।

डॉ. हरिओम ने 36 साल तक चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में सस्य विज्ञान व [illegible] के रूप में अपनी सेवाएं दी। वर्तमान में वे हरियाणा सरकार द्वारा संचालित परियोजना के तहत प्राकृतिक खेती मिशन [illegible] के पद पर कार्य कर रहे हैं। डॉ. हरिओम ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र स्थित प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण संस्थान में 10 हजार से अधिक किसानों सहित अन्य हितधारकों को प्राकृतिक खेती विषय पर प्रशिक्षण देकर उनको आत्मनिर्भर बनाया है। इसके अलावा उन्होंने देश के 500 से अधिक कृषि विज्ञान केंद्रों के अधिकारियों के वैज्ञानिकों को भी प्रशिक्षित किया है। इतना ही नहीं, डॉ. हरिओम ने केंद्रीय कृषि मंत्रालय के तहत आयोजित 11-13 सितंबर 2023 में नेपाल के 25 अधिकारियों के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि को भी प्रशिक्षण दिया। साथ ही [illegible] के 60 [illegible] और [illegible] को भी प्राकृतिक खेती विषय पर [illegible]। डॉ. हरिओम ने अप्रैल 2023 में [illegible] के [illegible] में प्राकृतिक खेती का [illegible] भूमिका निभाई। [illegible] प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल भी सम्मानित कर चुके हैं। भारत के पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद [illegible] पुरस्कार [illegible]। डॉ. हरिओम ने प्राकृतिक खेती के कार्य, प्रचार और प्रसार में [illegible]। इतना ही नहीं, डॉ. हरिओम के [illegible] 4 किताबें [illेgible] राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

प्रोफेसर रामचंद्र सिहाग अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कीटविज्ञानी हैं। उन्होंने फरवरी 1979 से जनवरी 2012 तक चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं दी, जिनमें 1979 से 1988 तक उन्होंने [illegible] रूप में मधुमक्खी पालन विषय पर अहम योगदान दिया। 1988 से 1995 तक उन्होंने एसोसिएट प्रोफेसर, प्राणीशास्त्र, 1995 से 2012 तक प्राणीशास्त्र और कीटविज्ञान, 1997 से 2000 व 2011 से 12 तक प्राणीशास्त्र विभाग और हेड, कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस एवं ह्यूमैनिटीज में 2001 से 2006 तक विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं दी। डॉ. रामचंद्र सिहाग के पास शिक्षण, अनुसंधान, शैक्षणिक प्रशासन व सरकारी संगठनों में 40 वर्षों का अनुभव है। इसके अलावा उन्होंने मधुमक्खी पालन के [illegible] पर्यावरण [illegible] कीट-विज्ञान, [illegible] विज्ञान, [illegible] के अनुसंधान में भी कई शोध किए हैं। इसके अलावा डॉ. रामचंद्र सिहाग ने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 190 से अधिक शोध और तकनीकी लेख प्रकाशित किए हैं। साथ ही पत्रिकाएं सहित 6 पुस्तकें संपादित भी की। 1980 से 82 तक मधुमक्खियों पर उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए उन्हें नई दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से [illegible] पुरस्कार से नवाजा गया। 1993 में मधुमक्खियों के संरक्षण विषय पर कार्य करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के कृषि विभाग से [illegible] पुरस्कार-सह प्रोजेक्ट [illegible] प्राप्त किया। 2005 में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में [illegible] के संरक्षण के लिए [illegible] भारत पर [illegible] और [illegible] प्राप्त किया। जीव विज्ञान के [illegible] के लिए डॉ. रामचंद्र को [illegible] अवार्ड, 2007 में चंडीगढ़ में एनवायरमेंटल [illegible] सोसाइटी ऑफ इंडिया से पर्यावरण और [illegible] एंड [illegible] सोसाइटी ऑफ इंडिया, हिसार से एजुकेशनल [illegible] पुरस्कार भी प्राप्त किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	28.1.24	2	4-5

व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़, राष्ट्र की भलाई को रखें सर्वोच्च : प्रो. बीआर. काम्बोज

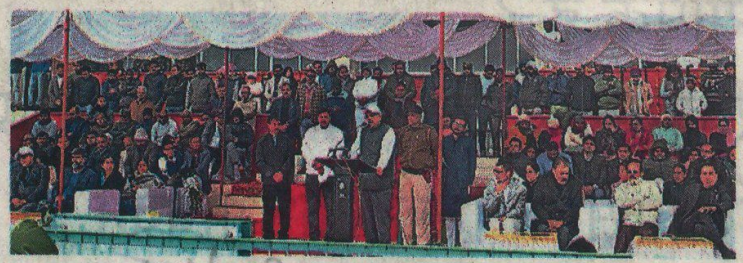

हकृवि में ध्वजारोहण करते हकृवि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गिरी सेंटर में आज 75वां गणतंत्र दिवस बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बतौर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे। उनके साथ धर्मपत्नी एवं कैंपस स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी मौजूद रहीं। विभिन्न यूनिटों के मार्चपास्ट व सलामी उपरांत मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि इस बार गणतंत्र दिवस विकसित भारत और भारत लोकतंत्र की जननी थीम पर मनाया जा रहा है। देश के हर शख्स खासतौर पर युवाओं को संकल्प लेना होगा कि वे देश को आजाद करवाने वाले शहीदों के बलिदान को सदा याद कर देश की उन्नति में अपना भरसक योगदान दें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	28.1.24	12	6

कृविवि के गिरी सेंटर में गणतंत्र दिवस मनाया

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गिरी सेंटर में शुक्रवार को 75वां गणतंत्र दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बतौर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे। उनके साथ धर्मपत्नी एवं कैंपस स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी मौजूद रही। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा देशभक्ति से ओतप्रोत रंगारंग कार्यक्रम, कविता व भाषण प्रस्तुत किए गए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	27.01.2024	--	--

व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़, राष्ट्र की भलाई को रखें सर्वोच्च : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गिरी सेंटर में आज 75वां गणतंत्र दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बतौर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे। उनके साथ धर्मपत्नी एवं कैंपस स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी मौजूद रही। विभिन्न यूनिटों के मार्चपास्ट व सलामी उपरांत मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि इस बार गणतंत्र दिवस विकसित भारत और भारत लोकतंत्र की जननी थीम पर मनाया जा रहा है। देश के हर शख्स खासतौर पर युवाओं को संकल्प लेना होगा कि वे देश को आजाद करवाने वाले शहीदों के बलिदान को सदा याद कर देश की उन्नति में अपना भरसक योगदान दें। साथ ही देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के सपने 2047 तक भारत को विकसित बनाना की साथ साकारात्मक ऊर्जा एवं सोच के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लें। उन्होंने गणतंत्र दिवस को एकता, सद्भावना और समानता का प्रतीक बताया।

मुख्यातिथि ने मातृशक्ति एवं महिलाशक्तिकरण का जिक्र करते हुए हर क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका को देश के उत्थान में अहम योगदान बताया। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे मानसिक, शारीरिक एवं बौद्धिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए हर गतिविधियां जिनमें शैक्षणिक-गैरशैक्षिणक व खेलों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को देश को समृद्ध बनाने व उसके उत्थान में दिए जा रहे सहयोग के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की। भविष्य में भी विश्वविद्यालय देश के किसानों की आर्थिक दशा को मजबूत करने के साथ देश को विकसित की राह पर ले जाने का काम करते रहेंगे। कुलपति ने कहा कि जाति, रंग और पंथ की भावनाओं से ऊपर उठकर जितना हो सके अपनी क्षमता से दूसरों के जीवन में बदलाव लाएं। व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़े एवं राष्ट्र की भलाई को सर्वोच्च रखें। बदलाव लाने के लिए अपनी ओर से थोड़-सा प्रयास अवश्य करें।

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा देशभक्ति से ओतप्रोत रंगारंग कार्यक्रम, कविता व भाषण प्रस्तुत किए गए। इसके अलावा कैंपस स्कूल के विद्यार्थियों ने योग मुद्रा कर दिनचर्या में इसे शामिल कर लोगों में सेहत के लिए जागरुकता लाना और प्रकृति से जुड़ कर निरोगी काया रखने का संदेश दिया। छात्रा जिन्नत ने कविता के माध्यम से देश के वीर शहीदों सुभाषचंद्र बोस, डॉ. भीमराव आंबेडकर, सरदार भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जैसों को याद रखने का संदेश दिया। छात्रा कनक लता ने गायन से पूरे समां को देशभक्ति को ओतप्रोत कर दिया।

इस अवसर पर छात्र कल्याण निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा, डॉ. सुशील लेगा सहित विश्वविद्यालय के अधिकारीगण, शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारी व विद्यार्थी भारी संख्या में मौजूद रहें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	27.01.2024	--	--

हकृवि के गिरी सेंटर के प्रांगण में धूमधाम से मनाया 75वां गणतंत्र दिवस

व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़, राष्ट्र की भलाई को रखें सर्वोच्च : प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 27 जनवरी। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गिरी सेंटर में आज 75वां गणतंत्र दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में वहीं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे। उनके साथ धर्मपत्नी एवं कैंपस स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी मौजूद रहीं। विभिन्न यूनिटों के मार्चपास्ट व सलामी उपरांत मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि इस बार गणतंत्र दिवस विकसित भारत और भारत लोकतंत्र को जननी थीम पर मनाया जा रहा है। देश के हर शख्स खासतौर पर युवाओं को संकल्प लेना होगा कि वे देश को आजाद करवाने वाले शहीदों के बलिदान को सदा याद कर देश की उन्नति में अपना भरसक योगदान दें। साथ ही देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के सपने 2047 तक भारत को विकसित बनाना को साथ सकारात्मक ऊर्जा एवं सोच के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लें। उन्होंने गणतंत्र दिवस को एकता, सद्भावना और समानता का प्रतीक बताया। मुख्यातिथि ने मातृशक्ति एवं महिलाशक्तिकरण का जिक्र करते हुए हर क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका को देश के उत्थान में अहम योगदान बताया। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे मानसिक, शारीरिक एवं बौद्धिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए हर

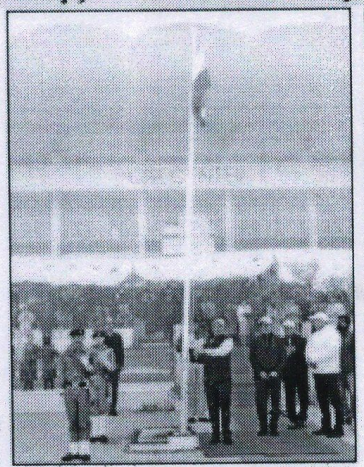

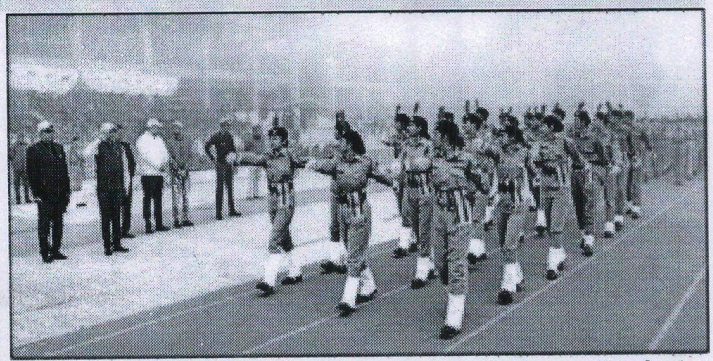

गतिविधियां जिनमें शैक्षणिक-गैरशैक्षणिक व खेलों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को देश को समृद्ध बनाने व उसके उत्थान में दिए जा रहे सहयोग के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की। भविष्य में भी विश्वविद्यालय देश के किसानों को आर्थिक दशा को मजबूत करने के साथ देश को विकसित की राह पर ले जाने का काम करते रहेंगे। कुलपति ने कहा कि जाति, रंग और पंथ की भावनाओं से ऊपर उठकर जितना हो सके अपनी क्षमता से दूसरों के जीवन में बदलाव लाएं। व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़े एवं राष्ट्र की भलाई को सर्वोच्च रखें। बदलाव लाने के लिए अपनी ओर से थोड़ा-सा प्रयास अवश्य करें। विद्यार्थियों ने देशभक्ति से ओतप्रोत रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति दी कार्यक्रम के दौरान विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा देशभक्ति से ओतप्रोत रंगारंग कार्यक्रम, कविता व भाषण प्रस्तुत किए गए। इसके अलावा कैंपस स्कूल के विद्यार्थियों ने योग मुद्रा कर दिनचर्या में इसे शामिल कर लोगों में खेत के लिए जागरूकता लाना और प्रकृति से जुड़ कर निरोगी काया रखने का संदेश दिया। छात्रा जिनत ने कविता के माध्यम से देश के वीर शहीदों सुभाषचंद्र बोस, डॉ. भीमराव अंबेडकर सरदार भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जैसों को याद रखने का संदेश दिया। छात्रा कनक लता ने गायन से पूरे समां को देशभक्ति को ओतप्रोत कर दिया। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा ने मुख्यातिथि का स्वागत किया और डॉ. सुशील लेगा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। साथ ही मंच संचालन छात्र अंकित व छात्रा रविना ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिकारीगण सहित शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारी व विद्यार्थी भारी संख्या में मौजूद रहें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	29-01-24	02	1-4

मौसम अनुकूल होने से इस बार भरपूर होगी सरसों की पैदावार

एचएयू के सरसों विशेषज्ञों को पिछले साल की तुलना में 20 फीसदी अधिक उपज होने की उम्मीद

श्याम नंदन कुमार

हिसार। मौसम अनुकूल होने से इस बार सरसों उत्पादक किसानों और कृषि वैज्ञानिकों को भरपूर पैदावार मिलने की उम्मीद है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सरसों विशेषज्ञ डॉ. राम अवतार का मानना है कि इस साल सरसों की खेती बेहतर है। मौसम भी साथ दे रहा है। ऐसे में पिछले साल की तुलना में 15 से 20 प्रतिशत अधिक उत्पादन की उम्मीद है।

डॉ. राम अवतार
सरसों विशेषज्ञ

बुआई के समय 30-32 डिग्री तापमान और दाने लगने के समय कम तापमान हो और दिन में धूप खिले तो बेहतर रहता है। सरसों को तभी नुकसान पहुंचता है जब पाला जम जाए। वहीं अगर एक-दो दिन ऐसी स्थिति आ भी जाए तो उचित प्रबंधन कर लेने से कोई असर नहीं पड़ता। अब दिन में अच्छी धूप निकल रही है तो इसका भी फायदा मिलेगा। पिछले साल पाला पड़ने के कारण सरसों की फसल को काफी नुकसान हुआ था और सरसों उत्पादन में राज्य का औसत उत्पादन घटकर 17 क्विंटल प्रति हेक्टयेर पर आ गया था। हालांकि पिछले साल कई किसानों ने 30-35 क्विंटल प्रति एकड़ तक उत्पादन लिया था।

सवा गुना ज्यादा उत्पादन की उम्मीद

भिवानी के किसान साधुराम के खेत में लगी सरसों की फसल। सौजन्य : किसान

फसल चक्र को अपनाने से बढ़ती है उर्वरा शक्ति

सरसों की खेती करने वाले किसानों ने बताया कि बाजरा, कपास अथवा ग्वार के बाद सरसों के उत्पादन से खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। फसल चक्र अपनाने वाले किसानों की औसत उपज पांच से सात प्रतिशत तक उत्पादन बढ़ जाता है।

हिसार के कैमरी रोड निवासी प्रगतिशील किसान मंदीप गोदारा ने बताया कि इस बार सरसों की फसल काफी उम्दा है। मौसम भी साथ दे रहा है। उम्मीद है, पिछले साल से सवा गुना जयादा उत्पादन होगा। पिछले साल पाले के कारण फलियों में पांच से सात दाने खराब हो गए थे।

मांग...15 मार्च के बाद तैयार हो जाएगी फसल, एक सप्ताह पहले शुरू हो खरीद

हिसार के गंगवा निवासी किसान कृष्ण कुमार का कहना है कि इस बार सरसों की फसल अच्छी है। खेती भी पिछले साल से अधिक रकबे में की है। अब तक मौसम अनुकूल रहा है। 15 मार्च तक फसल पककर तैयार हो जाएगी। वैसे इस फसल को बेचने में ज्यादा परेशानी नहीं होती, लेकिन कई बार इंतजार परेशान कर देता है। छोटे किसान दूसरों की ट्राली में सरसों लेकर जाते हैं, इंतजार करने की स्थिति में किसानों पर खर्च का अतिरिक्त बोझ बढ़ता है। इंतजार न करना पड़े, इसकी व्यवस्था होनी चाहिए।

- *आमतौर पर एक अप्रैल से सरकारी खरीद होती है, अगर सरकारी खरीद एक सप्ताह पहले शुरू हो तो बेहतर रहेगा।*

- **मंडी में फसल पहुंचते ही बिकने की हो व्यवस्था...**भिवानी के लोहारू क्षेत्र के खरकड़ी निवासी किसान साधु राम ने बताया कि वे हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के सरसों विशेषज्ञ से नियमित संपर्क में रहते हैं। सरसों की खेती में मौसम बड़ा खलनायक है। मौसम ने साथ दिया तो यह खेती फायदेमंद है। खुले बाजार में न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम में सरसों बिके तो किसानों को परेशानी होती है। इसके कारण किसान को पहले फसल घर लाना पड़ता है, फिर वह बाजार में ले जाता है।

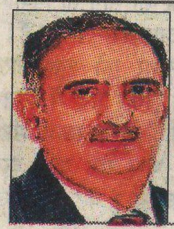

"एचएयू ने पिछले पांच साल में पांच उम्दा किस्म के सरसों के बीज विकसित किए हैं जो काफी अधिक तेल देने वाले हैं। कई प्रगतिशील किसान एचएयू में विकसित आरएच 725 किस्म से 30-35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक का उत्पादन ले रहे हैं। कृषि विशेषज्ञों से किसानों के बेहतर तालमेल के कारण हरियाणा सरसों के औसत उत्पादन में सबसे आगे है।
-डॉ. बीआर काम्बोज, कुलपति, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय